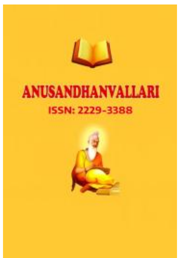

Anusandhanvallari
Vol 2024, No.1
December 2024
ISSN 2229-3388

"वैदिक साहित्य में कूटनीति के सिद्धांत: आधुनिक वैश्विक राजनीति और विदेश नीति के संदर्भ में"

डॉ० रिफाकत अली

असिस्टेंट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान

स्व० डॉ० आर०एस० टोलिया राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय

मुनस्यारी (पिथौरागढ़)

शोध सार (Abstract):

इक्कीसवीं सदी की समकालीन वैश्विक राजनीति और अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध मुख्य रूप से पश्चिमी यथार्थवादी (Realist) और शक्ति-केंद्रित सिद्धांतों द्वारा संचालित हैं, जो अक्सर राष्ट्रों के बीच प्रतिस्पर्धा और संघर्ष को जन्म देते हैं | ऐसे भू-राजनीतिक तनावों के बीच, यह शोध पत्र प्राचीन भारतीय वाङ्मय, विशेषकर वैदिक साहित्य (ऋग्वेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद) में निहित कूटनीतिक और राजनीतिक सिद्धांतों की आधुनिक प्रासंगिकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है | गुणात्मक और तुलनात्मक शोध प्रविधि का उपयोग करते हुए, इस पत्र में वैदिक काल की दूत-व्यवस्था (जैसे सरमा-पणि संवाद), संधि-विग्रह के नियम, बहुपक्षवाद (सभा और समिति), तथा 'वसुधैव कुटुम्बकम्' और 'भूमि सूक्त' जैसे वैश्विक कल्याणकारी दर्शनों का मूल्यांकन किया गया है | अध्ययन से निष्कर्ष निकलता है कि प्राचीन वैदिक कूटनीति 'शून्य-संचय खेल' (Zero-Sum Game) के बजाय 'धर्म' (Rule of Law), नैतिकता और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व पर आधारित है | वर्तमान समय में भारत की विदेश नीति में प्रयुक्त 'सॉफ्ट पावर', 'नेबरहुड फर्स्ट' नीति, 'वैक्सिन मैत्री' और जलवायु कूटनीति (International Solar Alliance) सीधे तौर पर इन वैदिक मूल्यों की व्यावहारिक निरंतरता को दर्शाते हैं | अंततः, यह शोध पत्र समकालीन अंतर्राष्ट्रीय विवादों, युद्धों और पर्यावरण संकटों के समाधान के लिए पश्चिमी यथार्थवाद के विकल्प के रूप में एक नैतिक और न्यायसंगत वैदिक कूटनीतिक मॉडल को अपनाने का सुझाव देता है |

मुख्य शब्द (Keywords): वैदिक साहित्य, कूटनीति, विदेश नीति, वसुधैव कुटुम्बकम्, बहुपक्षवाद, दूत-व्यवस्था, सॉफ्ट पावर, अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध |

प्रस्तावना

आधुनिक समय मे अंतर्राष्ट्रीय राजनीति एक अत्यंत जटिल, अत्यंत गतिशील और बहुध्रुवीय (Multipolar) प्रक्रिया बन चुकी है। अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का लगभग सर्वमान्य नियम है कि राष्ट्रों का कोई स्थायी मित्र अथवा स्थायी शत्रु नही होता, यदि कुछ स्थायी

होता है तो वह है राष्ट्रीय हित | प्रत्येक राष्ट्र का अंतिम उद्देश्य अपने राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा और पूर्ति करना है और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए कूटनीति (Diplomacy) सबसे सशक्त माध्यम है, क्योंकि यह अकाट्य सत्य है कि किसी भी उद्देश्य की पूर्ति बलपूर्वक किया जाना या तो संभव नही है अथवा यदि प्रयास किया भी जाए तो स्थायी रूप से उद्देश्य की पूर्ति नही की जा सकती और किसी भी संघर्ष का अंत बातचीत की मेज पर ही होता है | आधुनिक काल में कूटनीति के सिद्धांतों की जब चर्चा की जाती है तो मुख्यतः पश्चिमी राजनीतिक विचारकों जैसे निकोलो मैकियावेली, हॉप्स, मॉर्गेन्थाऊ आदि की विचारधारा को महत्वपूर्ण माना जाता है | यह विचारधारा सत्ता, राष्ट्रीय हितों की पूर्ति के लिए संघर्ष और यथार्थवाद (Realism) पर आधारित हैं |

परंतु, दो-दो विश्वयुद्द की विभीषिका, शीतयुद्द और उसके साथ ही अनेक भयानक संघर्ष जैसे अमेरिका-विएतनाम युद्द, दो-दो खाड़ी युद्द, अमेरिका-अफगानिस्तान युद्द और इसके अतिरिक्त विश्व के अनेक देशों में चल रहे संघर्षों के दृष्टिगत वैश्विक शांति और सुरक्षा के लिए केवल कूटनीति का यह पश्चिमी दृष्टिकोण पर्याप्त सिद्ध नहीं हो रहा है | ऐसी परिस्थितियों में अंतर्राष्ट्रीय राजनीति को एक ऐसे दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो नैतिक और समवेशी हो | ऐसा समावेशी और नैतिक दर्शन प्राचीन भारतीय वाङ्मय, विशेषकर वैदिक वाङ्मय में निहित हैं | वैदिक वाङ्मय को अनेक लोग केवल धार्मिक अथवा आध्यात्मिक ग्रंथ ही मानते हैं, परन्तु इन ग्रन्थों में विस्तार से राज्यशास्त्र, कूटनीति, और अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के व्यावहारिक सूत्र बिखरे हुए हैं | ऋग्वेद और अथर्ववेद जैसे ग्रंथों में वर्णित कूटनीतिक मूल्य आज की विदेश नीति के लिए अत्यंत प्रासंगिक हैं |

कूटनीति का वैदिक परिप्रेक्ष्य (Vedic Perspective of Diplomacy)

आधुनिक काल में यद्यपि कूटनीति का अंतिम लक्ष्य राष्ट्रीय हितों की अधिकाधिक पूर्ति रहा है परन्तु प्राचीन भारतीय चिंतन विशेषकर वैदिक वाङ्मय में कूटनीति का मूल उद्देश्य केवल नवीन भू-भाग जीतना, अनपी शक्ति का प्रदर्शन करना अथवा केवल राष्ट्रीय हितों की पूर्ति ही नहीं था, अपितु विश्व कल्याण और 'धर्म' (Rule of Law / Righteousness) की स्थापना करना था। वैदिक साहित्य में कूटनीति को 'दूत-कर्म' और संधियों के माध्यम से संचालित किया जाता था।

- ऋग्वेद का प्रसिद्ध सूक्त **"आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः" (ऋग्वेद 1.89.1)**[1] अर्थात हमारे पास सभी दिशाओं अर्थात सम्पूर्ण विश्व से ऐसे कल्याणकारी विचार आएं जो हमें ज्ञान से भर दें, यह विदेश नीति में तत्कालीन वैचारिक खुलेपन और सकारात्मक संवाद का वैश्विक संदेश है |

- वैदिक कालीन कूटनीति का मूल आधार ***"अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम्। उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् अर्थात*** **वसुधैव कुटुम्बकम्' है (अथर्ववेद का महा उपनिषद अध्याय 06, श्लोक 71)**[2] जिसका अर्थ है "अपना पराया की सोच/भावना संकुचित चेतना वाले व्यक्तियों की होती है, उदार ह्रदय वाले व्तक्तियों के लिए तो संपूर्ण पृथ्वी ही अपना परिवार है | यह वह भावना है जो आधुनिक समय के बहुपक्षवाद (Multilateralism) का प्राचीनतम रूप है |

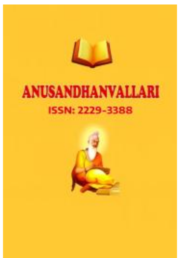

Anusandhanvallari
Vol 2024, No.1
December 2024
ISSN 2229-3388

आधुनिक वैश्विक राजनीति और विदेश नीति में प्रासंगिकता (Modern Relevance)

वर्तमान समय में जब विश्व अनेक सैन्य संघर्ष और जलवायु परिवर्तन जैसी अभूतपूर्व चुनौतियों का सामना कर रहा है, तब वैदिक कूटनीति का 'शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व' (Peaceful Co-existence) और **वसुधैव कुटुम्बकम्'** का सिद्धांत एक महत्वपूर्ण मार्गदर्शक सिद्दांत की भूमिका निभा सकता है | भारत की विदेश नीति में भी इन वैदिक मूल्यों की स्पष्ट छाप दिखाई देती है | उदाहरण के लिए, भारत द्वारा अपनी विदेश नीति में **'सॉफ्ट पावर' (Soft Power)**[3] (Pax Indica : India and the World of the Twenty-first Century, 2012, Shashi Tharoor, Penguin Books India) का उपयोग, **'नेबरहुड फर्स्ट' (Neighbourhood First)**[4] (MEA 2015, mea.gov।in) की नीति, स्पष्ट रूप से वैदिक दर्शन से प्रेरित है |

शोध की आवश्यकता और महत्व (Significance of the Research)

जब हम प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन पर शोध की बात करते हैं तो समान्यतः यह 'मनुस्मृति' और 'आचार्य चाणक्य कृत अर्थशास्त्र' तक ही सीमित रह जाता है | वैदिक साहित्य जिनमें वेद और ब्राह्मण ग्रंथ सम्मिलित हैं, में छिपे राजनीतिक और राजनयिक सिद्धांतों पर बहुत कम अध्ययन हुआ है | यह शोध पत्र इसी 'शोध अंतराल' (Research Gap) को भरने का प्रयास करता है । यह शोध इस बात का विश्लेषण करेगा कि कैसे प्राचीन वैदिक सिद्धांत न केवल भारत की, बल्कि सम्पूर्ण वैश्विक विदेश नीति को एक नया, अधिक मानवीय और स्थायी संरचना प्रदान कर सकते हैं |

साहित्य समीक्षा (Review of Literature)

प्रस्तुत शोध पत्र के विषय "वैदिक साहित्य में कूटनीति के सिद्धांत: आधुनिक वैश्विक राजनीति और विदेश नीति के संदर्भ में" को गहराई से समझने के लिए प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन और आधुनिक विदेश नीति पर हुए पूर्व शोध कार्यों का मूल्यांकन करना आवश्यक है | इस क्षेत्र में विभिन्न इतिहासकारों और राजनीतिशास्त्र के विद्वानों द्वारा किए गए प्रमुख अध्ययनों का सार प्रस्तुत है-

प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन और संस्थागत ढांचा

प्राचीन भारतीय शासन व्यवस्था को समझने में **काशी प्रसाद जायसवाल** का शोध कार्य अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखता | जायसवाल (1924) ने अपनी ऐतिहासिक कृति *"हिंदू पॉलिटी"* [5] में यह सिद्ध किया है कि वैदिक कालीन राजनीतिक संस्थाएं जैसे 'सभा' और 'समिति' आधुनिक लोकतांत्रिक और गणतंत्रीय व्यवस्थाओं के प्राचीनतम रूप थे | उनके अनुसार, वैदिक कूटनीति की जड़ें एक सुव्यवस्थित संस्थागत ढांचे में निहित थीं, जहाँ सामूहिक निर्णय सर्वोपरि थे |

अनंत सदाशिव अल्तेकर (1949) ने अपनी पुस्तक *"स्टेट एंड गवर्नमेंट इन एन्शिएंट इंडिया"* [6] में प्राचीन भारत में राज्य के लोक-कल्याणकारी स्वरूप को रेखांकित किया है | अल्तेकर के अनुसार, प्राचीन भारतीय कूटनीतिक सम्बन्धों का अंतिम उद्देश्य केवल

साम्राज्य विस्तार (Imperialism) नहीं था, बल्कि वैश्विक स्तर पर 'धर्म' (Rule of Law) और प्रजा की सुरक्षा सुनिश्चित करना था।

वैदिक साहित्य में कूटनीति और दूत-व्यवस्था

वैदिक काल के राजनीतिक और सामाजिक संगठनों पर गहन शोध करते हुए प्रसिद्ध इतिहासकार **रामशरण शर्मा** (1959) ने अपनी पुस्तक *"पॉलिटिकल आइडियाज एंड इंस्टीट्यूशंस इन एन्शिएंट इंडियन"* [7] में स्पष्ट किया है कि ऋग्वेद और अथर्ववेद के विभिन्न सूक्तों में कूटनीति (Diplomacy) और दूत-व्यवस्था का स्पष्ट उल्लेख मिलता है। शर्मा के अनुसार, प्राचीन समाज में युद्धों को टालने और परस्पर शांति समझौते करने के लिए कूटनीतिक दूतों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और सुरक्षित मानी जाती थी।

इसके अतिरिक्त, **बेनी प्रसाद** (1927) ने अपनी कृति *"थ्योरी ऑफ गवर्नमेंट इन एन्शिएंट इंडिया"* [8] में प्राचीन भारतीय विदेश नीति के दार्शनिक आधार की व्याख्या की है। प्रसाद का तर्क है कि पश्चिमी राजनीतिक विचारकों (जैसे मैकियावेली या हॉब्स) के विपरीत, वैदिक राजनीतिक चिंतन में 'नैतिकता' (Morality) और 'सत्य' को शक्ति-राजनीति (Power Politics) से ऊपर स्थान दिया गया था |

आधुनिक विदेश नीति और वैदिक दर्शन का अंतर्संबंध

श्याम सरन (2017) अपनी पुस्तक *"हाउ इंडिया सीज़ द वर्ल्ड: कौटिल्य टू द ट्वेन्टी-फर्स्ट सेंचुरी"* [9] में अपने विश्लेषण में कहते हैं कि आधुनिक भारत की विदेश नीति प्राचीन राजनीतिक सिद्धांतों से वैचारिक ऊर्जा प्राप्त करती है। सरन के अनुसार, भारत की 'सॉफ्ट पावर' (Soft Power) और बहुपक्षवाद (Multilateralism) की नीतियां मूलतः अथर्ववेद के महा उपनिषद के सिद्दांत **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** के वैश्विक दर्शन पर आधारित हैं।

अमिताभ मट्टू और **मलिका जोसेफ** (2020) ने "शेपिंग इंडियाज़ फ़ौरेन पॉलिसी: ट्रेडीशनल वैल्यू एंड मॉडर्न रियलिटीज"[10] में अपने शोध में यह रेखांकित किया है कि इक्कीसवीं सदी की जटिल भू-राजनीति में, जहाँ पश्चिमी यथार्थवाद (Realism) का सिद्दांत केवल वैश्विक संघर्ष को जन्म दे रहा है, वहीं भारतीय विदेश नीति का वैदिक मॉडल (शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व और पर्यावरण के प्रति वैश्विक जिम्मेदारी) दुनिया को एक नया और स्थायी विकल्प प्रदान करता है।

शोध अंतराल (Research Gap)

विदेश नीति के उपर्युक्त उपलब्ध शोध कार्यों की समीक्षा से स्पष्ट है कि अधिकांश शोधकर्ताओं ने प्राचीन भारतीय कूटनीति का अध्ययन या तो 'कौटिल्य के अर्थशास्त्र' के परिप्रेक्ष्य में किया है या फिर 'महाभारत' के शांतिपर्व तक सीमित रखा है। ऋग्वेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद जैसे मूल वैदिक वाङ्मय में बिखरे कूटनीतिक सूत्रों (जैसे दूत सूक्त, संगठन सूक्त) का आधुनिक वैश्विक

Anusandhanvallari
Vol 2024, No.1
December 2024
ISSN 2229-3388

संकटों और समकालीन विदेश नीति के साथ सीधे तुलनात्मक अध्ययन का अभाव है। प्रस्तुत शोध पत्र इसी 'शोध अंतराल' (Research Gap) को भरने का एक मौलिक प्रयास है।

शोध प्रविधि (Research Methodology)

शोध प्रविधि किसी भी अनुसंधान का वह योजनाबद्ध ढांचा है जो शोध को वैज्ञानिक, तार्किक और व्यवस्थित दिशा प्रदान करता है | प्रस्तुत शोध पत्र **"वैदिक साहित्य में कूटनीति के सिद्धांत: आधुनिक वैश्विक राजनीति और विदेश नीति के संदर्भ में"** के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित शोध पद्धति का उपयोग किया गया है:

शोध का प्रकार (Type of Research)

चूंकि यह शोध मुख्य रूप से **वैचारिक (Conceptual)**, **विश्लेषणात्मक (Analytical)** और **गुणात्मक (Qualitative)** प्रकृति का है और यह विषय ऐतिहासिक धार्मिक ग्रंथों और आधुनिक राजनीतिक सिद्धांतों के अंतर्संबंधों पर आधारित है, इसलिए इसमें सांख्यिकीय या मात्रात्मक (Quantitative) डेटा के स्थान पर वैचारिक, तार्किक और गुणात्मक विश्लेषण को प्राथमिकता दी गई है।

अध्ययन की पद्धति (Method of Study)

शोध को निष्पक्ष और तुलनात्मक बनाने के लिए निम्नलिखित दो प्रमुख पद्धतियों का समन्वय किया गया है:

1. **तुलनात्मक पद्धति (Comparative Method):** इसके अंतर्गत प्राचीन वैदिक कूटनीतिक सिद्धांतों की तुलना आधुनिक पश्चिमी राजनीतिक सिद्धांतों (जैसे यथार्थवाद, आदर्शवाद, नव-उदारवाद) से करने का प्रयत्न किया गया है।

2. **ऐतिहासिक-दार्शनिक पद्धति (Historical-Philosophical Method):** इसके माध्यम से वैदिक काल की राजनीतिक परिस्थितियों को समझने और उनके पीछे के दार्शनिक संदेशों की आधुनिक समय में प्रासंगिकता खोजने का प्रयत्न किया गया है |

डेटा और स्रोतों का संग्रहण (Data Collection & Sources)

इस शोध पत्र के लिए आवश्यक डेटा और सामग्री को मुख्यतः दो प्रकार के स्रोतों से एकत्रित किया गया है:

क) प्राथमिक स्रोत (Primary Sources):

- मूल वैदिक वाङ्मय, जिसमें मुख्य रूप से **ऋग्वेद, अथर्ववेद, यजुर्वेद, शतपथ ब्राह्मण** और **महा उपनिषद** सम्मिलित हैं |

- वेद और वेदांग ग्रन्थों में वर्णित विशिष्ट सूक्त जैसे— सभा-समिति सूक्त, दूत सूक्त, संगठन सूक्त और राष्ट्र-अभिवर्धन सूक्त के मूल श्लोक और उनके प्रामाणिक भाष्य (जैसे सायण भाष्य) का अध्ययन किया गया है |

ख) द्वितीयक स्रोत (Secondary Sources):

प्राचीन भारतीय राजनीतिशास्त्र और कूटनीति पर लिखे गए प्रमुख विद्वानों (जैसे के.पी. जायसवाल, ए.एस. अल्तेकर, आर.एस. शर्मा, श्याम सरन, अमिताभ मट्टू और मलिका जोसेफ) के ग्रंथ और शोध-पत्र आदि सम्मिलित किए गए हैं |

- आधुनिक अंतर्राष्ट्रीय संबंधों और भारत की विदेश नीति से संबन्धित पुस्तकें, राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिकाएं (Journals) महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में प्रयुक्त किए गए हैं।

- भारत सरकार के **विदेश मंत्रालय (Ministry of External Affairs)** की आधिकारिक वेबसाइट, प्रतिवेदन (Reports) और महत्वपूर्ण कूटनीतिक भाषणों को भी आधार बनाया गया है |

डेटा का विश्लेषण (Data Analysis)

शोध के लिए एकत्रित की गई कूटनीतिक अवधारणाओं और श्लोकों का **सामग्री विश्लेषण (Content Analysis)** किया गया है | वेदों में वर्णित अनेक प्रतीकात्मक शब्दों (जैसे दूत, संधि, वरुण के पाश आदि) को आधुनिक राजनीतिक शब्दावली (जैसे डिप्लोमैट, ट्रीटी, ग्लोबल गवर्नेंस) में अनुवादित करके उनका आलोचनात्मक मूल्यांकन किया गया है।

वैदिक साहित्य में कूटनीति के मूल सिद्धांत (Core Principles of Vedic Diplomacy)

वैदिक कालीन साहित्य केवल आध्यात्मिक चेतना के ग्रंथ ही नहीं है, बल्कि इनमे एक सुदृढ़ राजनीतिक व्यवस्था और कूटनीति के व्यावहारिक नियम भी समाहित हैं | वैदिक काल में अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के सुचारू संचालन के लिए 'धर्म' (Rule of Law) और 'सत्य' को इनका महत्वपूर्ण आधार माना गया था | इस अध्याय में वैदिक कालीन कूटनीति के महत्वपूर्ण स्तंभों का विस्तृत विश्लेषण किया गया है:

दूत-व्यवस्था और राजनयिक सिद्धांत (Institution of Envoys/Diplomacy)

वैदिक कालीन कूटनीति का सबसे महत्वपूर्ण स्तंभ 'दूत' (Envoy/Diplomat) की अवधारणा है | वेदों में राज्य के दूत को दो राज्यों के बीच प्रत्यक्ष संवाद और शांति स्थापित करने का महत्वपूर्ण माध्यम माना गया है

- **ऋग्वेद (1.72.7)**[11] में धार्मिक अर्थ में अग्नि को देवताओं का दूत (**"दूतं देवस्य"**) कहा गया है |

विद्वान् अग्ने वयुनानि क्षितीनाम् वि आनुषक् शुरुधः जीवसे धाः । अन्तर्दविद्वान् अध्वनो देवयानान् अतन्द्रः दूतो अभवः हविर्वाट् ॥

ऋग्वेद में इस सूक्त का अर्थ है कि जिस प्रकार अग्नि यज्ञ में की गयी आहुति को देवताओं तक पहुँचाती है, उसी प्रकार एक राजनयिक दूत एक राज्य का संदेश दूसरे राज्य तक पूरी प्रामाणिकता के साथ पहुँचाता है |

- **ऋग्वेद (10.108.3)**[12] में 'सरमा-पणि संवाद' मिलता का विस्तृत विवरण मिलता है जो वैदिक कूटनीति में 'दूत-कर्म' (Diplomatic Mission) का सबसे पहला और जीवंत उदाहरण है । जब कुछ असुरों (पणि) ने ऋषियों की गायों को चुरा लिया और उन्हे एक अंधेरी गुफा में छिपा दिया तो इंद्र की दूत "सरमा" पणियों के पास कूटनीतिक वार्ता के द्वारा गायों को वापस लाने के लिए जाती है | यह प्रसंग स्पष्ट दर्शाता है कि वैदिक काल में भी युद्ध प्रारम्भ करने से संवाद (कूटनीति) के माध्यम से संकट/संघर्ष की संभावना को टालने का प्रयास किया जाता था |

- वैदिक साहित्य में दूत एक महत्वपूर्ण और अति विश्वसनीय पद होता था क्योंकि दूत का कार्य केवल सूचनाओं और संदेशों का आदान-प्रदान ही नहीं अपितु राज्यों के मधी मैत्री स्थापित करना और अपने राज्य के लिए गुप्त सूचनाएँ एकत्र करना भी होता था | इस कार्य के लिए विशेष योग्यता की आवश्यकता होती है | वैदिक साहित्य दूत को सर्वशास्त्रविशारद अर्थात वेदों, धर्मग्रंथो और राजनीति का ज्ञाता, वाकपटु (प्रभावशाली वक्ता), निर्भीक, समृतिमान, शुचि एवं दक्ष और मनोवैज्ञानिक रूप से इतना सक्षम की दूसरे पक्ष की चेष्टाओं, चेहरे की भाव-भंगिमा आदि से उसके विचारों को जान सकता हो, अनिवार्य था, ताकि वह प्रत्येक परिस्थिति में अपने राज्य के हितों की रक्षा कर सके।

संधि और विग्रह की नीति (Policy of Alliance and Conflict)

वैदिक कूटनीति में युद्ध को अंतिम विकल्प माना गया है, और इससे पहले 'संधि' (Alliances/Treaties) के माध्यम से आपसी विवादों को सुलझाने को प्राथमिकता दी गई है।

- **अथर्ववेद (3.15.1)**[13] में कूटनीतिक संधियों और वाणिज्यिक सम्बन्धों का उल्लेख मिलता है | वैदिक काल में राजा अपनी सीमाओं को सुरक्षित रखने और आर्थिक समृद्धि के लिए मित्र राष्ट्रों के साथ कूटनीतिक समझौते (Treaties) करते थे।

- जब शांति के प्रयास विफल हो जाते थे, तब **'विग्रह'** (Conflict/Warfare) की नीति अपनाई जाती थी। **ऋग्वेद के 6.75 (आयुध सूक्त)**[14] में युद्ध कूटनीति का वर्णन है, लेकिन यह 'धर्मयुद्ध' के नियमों पर आधारित था। इसमें निहत्थे, सोए हुए या शरण में आए शत्रु पर प्रहार न करने का निर्देश है, जो आधुनिक 'अंतर्राष्ट्रीय मानवीय कानून' (International Humanitarian Law / Geneva Convention) का प्राचीनतम रूप है।

बहुपक्षवाद और अंतर्राष्ट्रीय संगठन (Multilateralism and International Assemblies)

आधुनिक वैश्विक राजनीति में संयुक्त राष्ट्र (UN) जैसे बहुपक्षीय संगठनों का जो महत्व है, उसके बीज वैदिक काल की 'सभा' और 'समिति' में देखे जा सकते हैं।

- **ऋग्वेद (10.191.2 - संगठन सूक्त)**[15] का प्रसिद्ध मंत्र कूटनीतिक संवाद और बहुपक्षवाद का मूलमंत्र है:

"सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।।"

(अर्थात: हम सब एक साथ चलें, एक साथ बोलें और हमारे मन एक समान होकर सत्य को जानें।)

यह सूक्त अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर सर्वसम्मति (Consensus-building) और सामूहिक सुरक्षा (Collective Security) के सिद्धांत को पुष्ट करता है। कूटनीति में इसका अर्थ है कि राष्ट्रों को एक-दूसरे के संप्रभु अधिकारों का सम्मान करते हुए वैश्विक कल्याण के लिए मिलकर कार्य करना चाहिए।

वैश्विक नागरिकता और 'धर्म' आधारित विदेश नीति (Global Citizenship & Ethical Diplomacy)

पश्चिमी कूटनीति जहाँ अक्सर शक्ति और स्वार्थ (Power Politics) पर आधारित होती है, वहीं वैदिक कूटनीति सार्वभौमिक कल्याण की कामना करती है।

अथर्ववेद (3.30.1)[16] में कहा गया है— *"**सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः**"* (अर्थात: मैं आप सबके बीच समान हृदय, समान मन और द्वेषहीनता स्थापित करता हूँ)। यह कूटनीति में परस्पर विश्वास (Mutual Trust) और 'सॉफ्ट पावर' (Soft Power) का सबसे मजबूत उदाहरण है।

- वैदिक कूटनीति का अंतिम उद्देश्य किसी भू-भाग पर अधिकार करना नहीं, बल्कि पूरे विश्व में श्रेष्ठ विचारों का प्रसार करना था, जिसे **"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"** (*ओ३म् इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्। अपघ्नन्तो अराव्णः॥*) [17] (ऋग्वेद 9.63.5) के रूप में परिभाषित किया गया है।

आधुनिक वैश्विक राजनीति और वैदिक दर्शन (Modern Global Politics & Vedic Philosophy)

वर्तमान समय में वैश्विक राजनीति मुख्य रूप से पश्चिमी राजनीतिक सिद्धांतों—विशेषकर थॉमस हॉब्स और हंस मॉर्गेन्थाऊ के 'यथार्थवाद' (Realism)—द्वारा संचालित है, जो शक्ति-संघर्ष (Power Politics) और राष्ट्रीय हित को सर्वोपरि मानते हैं। इसके विपरीत, वैदिक दर्शन वैश्विक राजनीति को एक 'शून्य-संचय खेल' (Zero-Sum Game) के रूप में नहीं, बल्कि एक परस्पर जुड़े हुए परिवार के रूप में देखता है। इस अध्याय में समकालीन वैश्विक राजनीति के संदर्भ में वैदिक दर्शन के व्यावहारिक अनुप्रयोगों का विश्लेषण किया गया है:

'वसुधैव कुटुम्बकम्' और बहुपक्षवाद (Multilateralism)

वैदिक विचार का सबसे लोकप्रिय और प्रभावी कूटनीतिक सूत्र **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** (संपूर्ण पृथ्वी ही एक परिवार है) है।

- **आधुनिक संदर्भ:** आज की वैश्वीकृत दुनिया में जहाँ राष्ट्र जलवायु परिवर्तन, महामारियों और आर्थिक मंदी जैसी साझा चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, वहाँ यह दर्शन अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है।

- **व्यावहारिक अनुप्रयोग:** भारत ने अपनी अध्यक्षता के दौरान इस वैदिक दर्शन को वैश्विक मंच पर स्थापित किया | वैश्विक कूटनीति में इसका उपयोग बहुपक्षवाद (Multilateralism) को मजबूत करने और संकीर्ण राष्ट्रवाद (Narrow Nationalism) से ऊपर उठकर वैश्विक एकजुटता को बढ़ावा देने के लिए किया जा रहा है |[18].

सॉफ्ट पावर (Soft Power) और सांस्कृतिक कूटनीति

जोसफ नाई (Joseph Nye) द्वारा प्रतिपादित 'सॉफ्ट पावर' (आकर्षण और प्रभाव की शक्ति) की अवधारणा वैदिक साहित्य में हज़ारों वर्ष पूर्व से ही विद्यमान है।

- वैदिक दर्शन किसी राष्ट्र को सैन्य बल (Hard Power) के बजाय वैचारिक और सांस्कृतिक श्रेष्ठता के माध्यम से वैश्विक गुरु बनने की प्रेरणा देता है, जिसका मूल मंत्र **"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"** (संपूर्ण विश्व को श्रेष्ठ बनाना) है।
- **आधुनिक संदर्भ:** वर्तमान समय में भारत द्वारा वैश्विक स्तर पर **अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस**, आयुर्वेद का प्रसार, और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के सिद्धांतों का प्रचार इसी वैदिक कूटनीति का हिस्सा है। यह नीति बिना किसी सैन्य टकराव के दुनिया के देशों के साथ गहरे द्विपक्षीय सम्बन्धस्थापित करने में मदद करती है |[19]

वैश्विक शांति (World Peace) बनाम यथार्थवादी संघर्ष

पश्चिमी यथार्थवाद यह मानता है कि अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था 'अराजक' (Anarchic) है और युद्ध अपरिहार्य है। इसके विपरीत, वैदिक कूटनीति सुरक्षा को सामूहिक और शांतिपूर्ण मानती है।

- **ऋग्वेद का शांति पाठ** (*ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥*")[20] (यजुर्वेद, अध्याय 36, मंत्र 17) केवल मनुष्यों के बीच ही नहीं, बल्कि प्रकृति, अंतरिक्ष और वनस्पतियों के बीच भी शांति की कामना करता है।
- **आधुनिक संदर्भ:** आज के भू-राजनीतिक तनावों (जैसे समकालीन वैश्विक युद्ध और क्षेत्रीय संघर्ष) के बीच, यह दर्शन यह सिखाता है कि स्थायी सुरक्षा हथियारों की होड़ (Arms Race) से नहीं, बल्कि पर्यावरण और मानव जाति के प्रति साझा जिम्मेदारी की भावना से ही आ सकती है।

Anusandhanvallari
Vol 2024, No.1
December 2024
ISSN 2229-3388

पर्यावरण कूटनीति (Environmental Diplomacy)

वैदिक साहित्य में प्रकृति को माता माना गया है (***माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः पर्जन्यः पिता स उ नः पिपर्तु॥*** - अथर्ववेद, अध्याय 12, मंत्र 12)[21] | यह श्लोक बताता है कि मानव का जन्म और पालन-पोषण इसी प्रकृति की गोद में होता है, जैसे एक पुत्र का अपनी माँ के प्रति कर्तव्य होता है , वैसे ही इस धरती को स्वच्छ, हरा-भरा और सुरक्षित रखना मानव का सबसे बड़ा धर्म है ।

- **आधुनिक संदर्भ:** आज 'जलवायु परिवर्तन' (Climate Change) अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का एक मुख्य एजेंडा बन चुका है | पेरिस जलवायु समझौते और वैश्विक कार्बन उत्सर्जन वार्ताओं में वैदिक पर्यावरण चेतना एक मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में उभरती है |
- यह दर्शन कूटनीतिज्ञों को यह याद दिलाता है कि विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन स्थापित करना केवल एक कानूनी मजबूरी नहीं, बल्कि एक नैतिक कर्तव्य है |

समकालीन विदेश नीति में व्यावहारिक अनुप्रयोग (Practical Application in Contemporary Foreign Policy)

वैदिक साहित्य के कूटनीतिक सिद्धांत केवल दार्शनिक विचार नहीं हैं, बल्कि वे समकालीन समय में भारत की रणनीतिक प्राथमिकताओं और विदेश नीति की दिशा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं | भारत की आधुनिक विदेश नीति यथार्थवादी हितों और वैदिक आदर्शों का एक अनूठा समन्वय प्रस्तुत करती है। इस अध्याय में समकालीन विदेश नीति में इसके व्यावहारिक अनुप्रयोगों का विश्लेषण किया गया है:

'नेबरहुड फर्स्ट' (Neighbourhood First) **और सागर** (SAGAR) **नीति**

वैदिक कूटनीति में पड़ोसियों के साथ शांतिपूर्ण और सहयोगात्मक सम्बन्ध बनाने पर अत्यधिक बल दिया गया है | अथर्ववेद का सूक्त (3.30.1) समाज और राष्ट्रों के बीच द्वेषहीनता स्थापित करने की बात करता है |[22]

व्यावहारिक अनुप्रयोग: भारत की वर्तमान **'नेबरहुड फर्स्ट'** नीति इसी दर्शन का विस्तार है, जिसके तहत संकट के समय पड़ोसियों (जैसे श्रीलंका के आर्थिक संकट या नेपाल के भूकंप) की बिना किसी स्वार्थ के वित्तीय और मानवीय सहायता की जाती है।

इसी प्रकार, हिंद महासागर क्षेत्र के लिए भारत की SAGAR (Security and Growth for All in the Region) नीति वैदिक कूटनीति के "सामूहिक सुरक्षा और विकास" के सिद्धांत को व्यावहारिक रूप देती है, जहाँ भारत स्वयं को एक 'नेट सिक्योरिटी प्रोवाइडर' (Net Security Provider) के रूप में प्रस्तुत करता है |**वैश्विक संकटों में मध्यस्थता और 'वैक्सिन मैत्री' (Vaccine Maitri)**

वैदिक दर्शन संकट के समय विश्व के प्रति एक उत्तरदायित्व की भावना सिखाता है।

Anusandhanvallari
Vol 2024, No.1
December 2024
ISSN 2229-3388

- **वैक्सिन मैत्री (Vaccine Diplomacy):** कोविड-19 महामारी के दौरान भारत द्वारा दुनिया के 100 से अधिक देशों को मुफ्त या कम कीमत पर स्वदेशी वैक्सीन उपलब्ध कराना वैदिक मूल्य **"सर्वे सन्तु निरामयाः"** (सभी रोगमुक्त हों) का आधुनिक कूटनीतिक उदाहरण था ।[23]
- इसने अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भारत की छवि को एक 'विश्व बंधु' (Global Friend) के रूप में स्थापित किया।
- **मध्यस्थता की भूमिका:** समकालीन वैश्विक संघर्षों में भारत का रुख किसी एक गुट का अंधानुकरण करने के स्थान पर सदैव 'संवाद और कूटनीति' (Dialogue and Diplomacy) के पक्ष में रहा है। भारत का यह आधिकारिक बयान कि *"यह युग युद्ध का नहीं है"*, ऋग्वेद के संगठन सूक्त की संवादपरक कूटनीति को वैश्विक मंच पर दोहराता है।

'सॉफ्ट पावर' (Soft Power) और वैश्विक गठबंधन

भारत ने अपनी प्राचीन विरासत का उपयोग कूटनीतिक प्रभाव बढ़ाने के लिए कुशलतापूर्वक किया है ।[24]

- **अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (International Solar Alliance - ISA):** यह भारत की पर्यावरण केंद्रित विदेश नीति का एक बेहतरीन उदाहरण है, जो अथर्ववेद की 'भूमि सूक्त' (प्रकृति की रक्षा) की अवधारणा से प्रेरित है।
- इसके अतिरिक्त, वैश्विक डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर (UPI) को अन्य विकासशील देशों (Global South) के साथ साझा करना यह दर्शाता है कि भारत कूटनीति को तकनीकी एकाधिकार के रूप में नहीं, बल्कि सामूहिक प्रगति के माध्यम से **"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"** के विचार को साकार करने के साधन के रूप में देखता है।

ग्लोबल साउथ (Global South) का नेतृत्व

वैदिक साहित्य में कमजोर और वंचित राष्ट्रों की आवाज बनने को 'राजधर्म' का हिस्सा माना गया है। समकालीन विदेश नीति में, भारत बहुपक्षीय मंचों (जैसे संयुक्त राष्ट्र, G20) पर 'ग्लोबल साउथ' (विकासशील और गरीब देशों) की मजबूत आवाज बनकर उभरा है, जिससे अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था अधिक लोकतांत्रिक और समावेशी बन सके।

निष्कर्ष एवं सुझाव (Conclusion & Suggestions)

शोध का निष्कर्ष (Conclusion)

प्रस्तुत शोध पत्र के विस्तृत विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि प्राचीन भारतीय वाङ्मय, विशेषकर **वैदिक साहित्य**, केवल आध्यात्मिक और धार्मिक उपदेशों का संग्रह नहीं है, बल्कि इसमें राजनीति विज्ञान, शासन कला और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के व्यावहारिक सूत्र भी गहराई से समाहित हैं |

जहाँ आधुनिक वैश्विक राजनीति मुख्य रूप से पश्चिमी विचारकों (जैसे थॉमस हॉप्स, मैकियावेली और हंस मॉर्गेन्थाऊ) के 'यथार्थवाद' (Realism) और शक्ति-संघर्ष (Power Politics) पर आधारित है, वहीं वैदिक कूटनीति एक अधिक समावेशी, नैतिक और टिकाऊ वैश्विक मॉडल प्रस्तुत करती है |

शोध के मुख्य निष्कर्ष निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझे जा सकते हैं:

1. **संवाद और दूत-व्यवस्था की प्राचीनता:** ऋग्वेद में वर्णित दूत-व्यवस्था और 'सरमा-पणि संवाद' यह सिद्ध करते हैं कि प्राचीन भारत में युद्ध को हमेशा अंतिम विकल्प माना गया और संकटों को टालने के लिए कूटनीतिक संवाद (Diplomatic Mission) को प्राथमिकता दी गई |[25]

2. **बहुपक्षवाद का प्राचीन आधार:** ऋग्वेद का 'संगठन सूक्त' (*"सं गच्छध्वं सं वदध्वं..."*) आधुनिक बहुपक्षवाद (Multilateralism) और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों (जैसे संयुक्त राष्ट्र) में सर्वसम्मति बनाने (Consensus-building) के सिद्धांतों का प्राचीनतम रूप है।

3. **समकालीन विदेश नीति में जीवंतता:** भारत की वर्तमान विदेश नीति में प्रयुक्त 'सॉफ्ट पावर', 'नेबरहुड फर्स्ट' नीति, वैश्विक महामारी के समय चलाई गई 'वैक्सिन मैत्री', सीधे तौर पर वैदिक दर्शन की व्यावहारिक निरंतरता को दर्शाता है |

4. **पर्यावरण और वैश्विक सुरक्षा:** अथर्ववेद का 'भूमि सूक्त' वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन (Climate Change) जैसी गंभीर वैश्विक समस्याओं से निपटने के लिए 'पर्यावरण कूटनीति' (Environmental Diplomacy) को एक मजबूत नैतिक आधार प्रदान करता है।

संक्षेप में, वैदिक कूटनीति 'शून्य-संचय खेल' (Zero-Sum Game) के बजाय 'शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व' और वैश्विक कल्याण पर जोर देती है, जो वर्तमान के विभाजित विश्व को जोड़ने में सक्षम है।

शोध के आधार पर सुझाव (Suggestions)

वैदिक कूटनीतिक सिद्धांतों की आधुनिक प्रासंगिकता को देखते हुए निम्नलिखित सुझाव प्रस्तावित किए जाते हैं:

1. **अकादमिक पाठ्यक्रम में शामिल करना:** राजनीति विज्ञान और अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों (International Relations) के वैश्विक और राष्ट्रीय पाठ्यक्रमों में कौटिल्य के साथ-साथ वैदिक साहित्य (ऋग्वेद, अथर्ववेद के राजनीतिक सूक्तों) के सिद्धांतों को भी औपचारिक रूप से स्थान दिया जाना चाहिए |

2. **राजनयिक प्रशिक्षण में अनुप्रयोग:** भारतीय विदेश सेवा (IFS) और वैश्विक कूटनीतिज्ञों के प्रशिक्षण मॉड्यूल में वैदिक कूटनीतिक मूल्यों (जैसे धर्म-आधारित शासन और कूटनीतिक नैतिकता) को शामिल किया जाए, जिससे नीति-निर्माण में नैतिक दृष्टिकोण को बढ़ावा मिल सके |

3. **वैश्विक संकटों में वैदिक मॉडल का उपयोग:** समकालीन भू-राजनीतिक संघर्षों (जैसे युद्ध और क्षेत्रीय विवाद) के समाधान के लिए संयुक्त राष्ट्र (UN) जैसे मंचों पर 'वसुधैव कुटुम्बकम्' और 'संगठन सूक्त' के सिद्धांतों के आधार पर सामूहिक सुरक्षा और मध्यस्थता (Mediation) के नए रणनीतिक ढांचे तैयार किए जाने चाहिए।

4. **सॉफ्ट पावर का निरंतर विस्तार:** भारत को अपनी विदेश नीति में पारंपरिक ज्ञान, आयुर्वेद, योग और वैदिक पर्यावरण चेतना जैसी 'सॉफ्ट पावर' का उपयोग वैश्विक स्तर पर विश्वास निर्माण (Trust Building) के लिए निरंतर जारी रखना चाहिए।

'संदर्भ ग्रंथ सूची' (Bibliography/References List):

1. **(ऋग्वेद 1.89.1)**
2. **अथर्ववेद का महा उपनिषद अध्याय 06, श्लोक 71**
3. Tharoor, Shashi, **(2012)**, Pax Indica: India and the World of the Twenty-first Century, Penguin Books India
4. MEA **2015**, mea.gov।in
5. Jayaswal, K. P. (1924). *Hindu Polity: A Constitutional History of India in Hindu Times*. Butterworth & Co.
6. Altekar, A. S. (1949). *State and Government in Ancient India*. Motilal Banarsidass.
7. Sharma, R. S. (1959). *Political Ideas and Institutions in Ancient India*. Motilal Banarsidass.
8. Prasad, B. (1927). *The Theory of Government in Ancient India*. Indian Press.
9. Saran, S. (2017). *How India Sees the World: Kautilya to the 21st Century*. Juggernaut Books.
10. Mattoo, A., & Joseph, M. (2020). *Shaping India's Foreign Policy: Traditional Values and Modern Realities*. Oxford University Press.
11. **ऋग्वेद (1.72.7)**
12. **ऋग्वेद (10.108.3)**
13. **अथर्ववेद (3.15.1)**
14. **ऋग्वेद 6.75 (आयुध सूक्त)**
15. **ऋग्वेद (10.191.2 - संगठन सूक्त)**
16. **अथर्ववेद (3.30.1)**

17. **ऋग्वेद 9.63.5**
18. Saran, S. (2017). *How India Sees the World: Kautilya to the 21st Century*. Juggernaut Books.
19. Mattoo, A., & Joseph, M. (2020). *Shaping India's Foreign Policy: Traditional Values and Modern Realities*. Oxford University Press.
20. **यजुर्वेद, अध्याय 36, मंत्र 17**
21. **अथर्ववेद, अध्याय 12, मंत्र 12**
22. Prasad, B. (1927). *The Theory of Government in Ancient India*. Indian Press.
23. Mattoo, A., & Joseph, M. (2020). *Shaping India's Foreign Policy: Traditional Values and Modern Realities*. Oxford University Press.
24. Saran, S. (2017). *How India Sees the World: Kautilya to the 21st Century*. Juggernaut Books.
25. Sharma, R. S. (1959). *Political Ideas and Institutions in Ancient India*. Motilal Banarsidass.